भारतीय जनसंख्या

वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार देश की जनसंख्या 1,21,01,93,422 (एक अरब इक्कीस करोड़ एक लाख तिरानवे हजार चार सौ बाइस) हो चुकी है। इनमे पुरुषों की संख्या 62.37 करोड़ तथा महिलाओं की संख्या 58.64 करोड़ है। भारत की जनसंख्या अमेरिका, इन्डोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान और बंगलादेश की कुल जनसंख्या से भी ज्यादा है। देश में पिछले एक दशक मे 18.3 करोड़ नई आबादी जुड़ गयी है। दुनिया की कुल आबादी में भारत की हिस्सेदारी 17.5 फीसदी है जबकि कुल वैश्विक क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत हिस्सा ही भारत के पास है। जनसंख्या के मामले में भारत 134 करोड़ की सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश चीन के करीब पहुँचता जा रहा है।

अमेरिकी एजेन्सी पोपुलेशन रेफरेंस ब्यूरो के अनुसार 2050 में भारत की जनसंख्या चीन को पीछे छोड़ते हुए विश्व में सर्वाधिक 162.8 करोड़ के आसपास हो जाएगी। यद्यपि नई जनगणना में देश की जनसंख्या वृद्धि में कमी देखी गई है फिर भी तेजी से बढ़ती जनसंख्या देश की आर्थिक, सामाजिक समस्याओं की जननी बन विकास के लिए खतरे की घंटी बन गई है।

उपरोक्त आँकड़े यह बताने के लिए काफी है कि हमारा देश जनसंख्या विस्फोट के चपेट में आ चुका है।

जनसंख्या विस्फोट का अर्थ

जनसंख्या विस्फोट का अर्थ समझने के पहले हमें जनांकिकी परिवर्तन सिद्धांत **(Theory of Demographic transition)** को भी जानना होगा। इसके अनुसार प्रत्येक देश की जनसंख्या को तीन अवस्थाओं से गुजरना होता है और सिर्फ दूसरी अवस्था में जनसंख्या तेजी के साथ बढ़ती है।

पहली अवस्था में जन्मदर और मृत्युदर दोनों ऊँची होती है, इसलिए जनसंख्या स्थिर रहती है। ऐसी स्थिति अल्प विकसित देशों में पाया जाता है। अल्प विकसित देशों में प्रति व्यक्ति वास्तविक आय कम होता है और जीवन स्तर निम्न होता है। असंतुलित और अपर्याप्त भोजन, आवास की अस्वास्थकर व्यवस्था, शिक्षा, अंधविश्वास और चिकित्सा की सुविधाएं नहीं होने के कारण मृत्यु दर

ऊँची होती है, वहीं सामाजिक और आर्थिक कारणों से जन्म दर ऊँची होती हैं। कृषि क्षेत्र में बड़े किसानों के लिए बड़े परिवार का पालन कोई समस्या नहीं होती है इसलिए वह बड़े परिवार की इच्छा रखता है। छोटे किसानों का जीवन स्तर निम्न होता है और उनके परिवारों में मृत्यु दर अधिक होता है। अतः वे अधिक बच्चों की इच्छा रखते हैं। इसके अतिरिक्त कृषि व्यवसाय में बच्चों को कम आयु में ही काम पर लगाया जा सकता है। परिवार में लड़कों का होना सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से भी आवश्यक होता है। लोगों को परिवार नियोजन के बारे में अधिक जानकारी नहीं होती है। ये सभी कारण सामूहिक रूप से ऊँची जन्म दर के लिए जिम्मेदार होते हैं लेकिन इस अवस्था में ऊंची मृत्यु दर और जन्म दर के बीच संतुलन रहता है जिससे जनसंख्या स्थिर रहती है।

दूसरी अवस्था में मृत्यु दर नीचे आने लगती है लेकिन जन्म दर ऊँची बनी रहती है। हमारा देश अभी इसी अवस्था से गुजर रहा है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया आरंभ होते ही राष्ट्रीय आय में वृद्धि के साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ती है और लोगों के जीवन स्तर में सुधार होने लगता है। जनांकिकी परिवर्तन की इस दूसरी अवस्था में जनसंख्या तेजी से बढ़ती है। अकाल और भुखमरी की समस्या दूर हो जाती है। चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि हो जाती है। इन सभी कारणों से मृत्यु दर में कमी होती है। जबकि जन्म दर पहले की तरह ऊँची रहती है क्योंकि जन्म दर को प्रभावित करने वाले तत्वों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता है। रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास, शिक्षा, परिवार के बारे में दृष्टिकोण आदि जो जन्म दर को प्रभावित करते हैं, इनमें परिवर्तन तभी होता है जब औद्योगिकरण के साथ-साथ शहरीकरण होता है। जाहिर है कि इस प्रक्रिया में समय लगता है। अतः जन्म दर तथा मृत्युदर का अन्तर काफी बढ़ जाता है और जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगती है। ऐसी स्थिति में जनसंख्या में 2 प्रतिशत प्रतिवर्ष या उससे भी अधिक दर से वृद्धि होने लगती है। इसी स्थिति को अर्थशास्त्र की भाषा में **जनसंख्या विस्फोट** कहते हैं। भारत इस वर्तमान समय में इसी अवस्था से गुजर रहा है।

तीसरी अवस्था में जन्म दर और मृत्यु दर दोनों नीची हो जाती है और जनसंख्या वृद्धि की दर भी नीची रहती है। यह अवस्था तब आती है जब देश में औद्योगिकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया साथ-साथ चलती है। जहाँ औद्योगिकरण के साथ-साथ शहरीकरण नहीं होता है वहाँ जन्म दर नीचे आने में समय लगता है। चुकि औद्योगिकरण और शहरीकरण के साथ शिक्षा बढ़ती है, जिससे धार्मिक अन्धविश्वास में कमी होती है और लोग वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हैं। उनमें परिवार नियोजन के बारे में जानकारी बढ़ती है। फलस्वरूप जन्म दर गिरने लगती है। औद्योगिकरण और शहरीकरण के साथ जैसे-जैसे आर्थिक विकास की गति तेज होने लगती है। स्त्रियाँ भी घर से बाहर निकलकर उत्पादक कार्यों में संलग्न हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में वे परिवार नियोजन के प्रति जागरूक है। आर्थिक विकास के साथ सामाजिक जीवन में होने वाले परिवर्तन जन्म दर को नीचे गिराते हैं। इस प्रकार **जनसंख्या विस्फोट** की स्थिति खत्म हो जाती है और जनसंख्या की समस्या का समाधान हो जाता है।

निम्न आँकड़ों में हम देख सकते हैं कि आबादी बेलगाम, बेतहासा एवं अनियंत्रित रूप से बढ़ती जा रही है।

1901 से 2011 तक भारत की जनसंख्या

जनगणना वर्ष	जनसंख्या करोड़ में	दशक में परिवर्तन करोड़ में (प्रतिशत में)	दशक में वृद्धि की दर
1901	23.84	+ 0.24	-
1911	25.21	+ 1.37	+ 5.75
1921	25.13	- 0.08	- 0.31
1931	27.90	+ 2.77	+ 11.00
1941	31.87	+ 3.97	+ 14.22
1951	36.11	+ 4.24	+ 13.31
1961	43.11	+ 7.81	+ 21.64
1971	54.82	+ 10.90	+ 24.80
1981	68.33	+ 13.51	+ 24.66
1991	84.63	+ 16.30	+ 23.86
2001	102.70	+ 18.30	+ 21.30
2011	121.02	+ 18.32	+ 17.64

उपर्युक्त सारणी के दर्शाए गए दशकीय जनसंख्या वृद्धि को बार चार्ट द्वारा भी दिखाया जा सकता है।

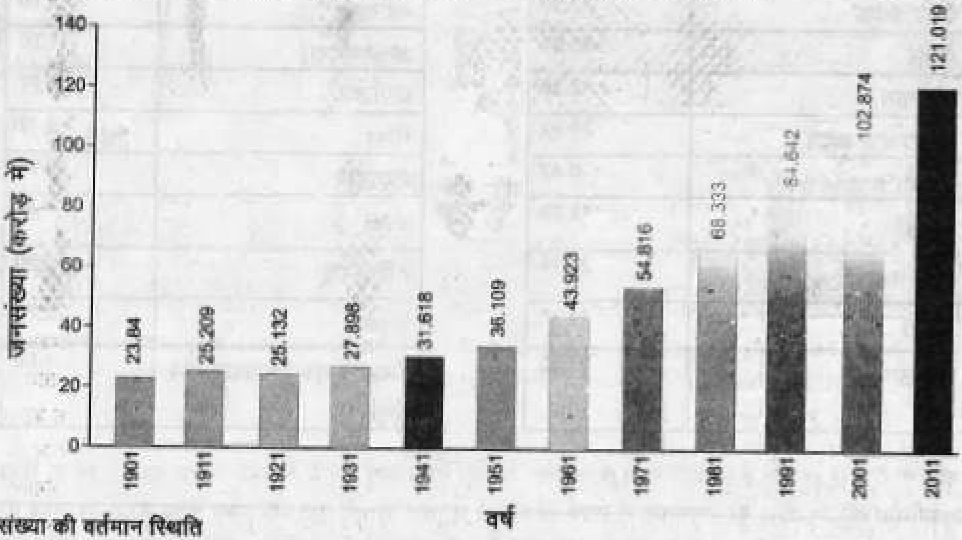

जनसंख्या की वर्तमान स्थिति

देश की 15वीं जनगणना (2011) के प्रारंभिक आँकड़ों के अनुसार देश की कुल आबादी 1,21,01,93,422 हो गई है 2001 की जनगणना के बाद से अभी तक भारत की आबादी लगभग 18 करोड़ बढ़ी है। जो पिछली जनगणना के मुकाबले 17.64 प्रतिशत ज्यादा है।

जनगणना वर्ष 2001 से जनगणना वर्ष 2011 के बीच जनसंख्या के दशकीय वृद्धि दर को निम्न आँकड़ों में देखा जा सकता है।

जनगणना 2011 के अनुसार भारत और राज्यों के जनसंख्या में दशकीय वृद्धि दर

भारत/राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	दशकीय वृद्धि दर
भारत	**17.64**
जम्मू कश्मीर	23.71
हिमाचल प्रदेश	12.81
पंजाब	13.73
चंडीगढ़	17.10
उत्तराखण्ड	19.17
हरियाणा	19.90
दिल्ली	20.96
राजस्थान	21.44
उत्तर प्रदेश	20.09
बिहार	25.07
सिक्किम	12.36
अरूणाचल प्रदेश	25.92
नागालैन्ड	-0.47
मणिपुर	18.65
मिजोरम	22.78
त्रिपुरा	14.75
मेघालय	27.82

भारत/राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	दशकीय वृद्धि दर
आसाम	16.93
पश्चिम बंगाल	13.93
झारखण्ड	22.34
उडिसा	13.97
छत्तीसगढ़	22.59
मध्य प्रदेश	20.30
गुजरात	19.17
दमन दीव	53.54
दादर एवं नगर हवेली	55.50
महाराष्ट्र	15.99
आन्ध्र प्रदेश	11.10
कर्नाटक	15.67
गोआ	8.17
लक्ष्यद्वीप	6.23
केरल	4.86
तमिलनाडु	15.60
पुडुचेरी	22.72
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	6.68

यह वृद्धि गाँवों में 12.18 और शहरी क्षेत्रों में 31.80 प्रतिशत की रही है। ग्रामीण आबादी में सबसे अधिक बढ़ोतरी की दर **बिहार** में 23.90 प्रतिशत रही है। 2011 की जनगणना के तदर्थ आँकड़ों के अनुसार देश की कुल जनसंख्या में 83 करोड़ 31 लाख ग्रामीण और 37 करोड़ 71 लाख शहरी आबादी है। पिछले एक दशक में ग्रामीण आबादी में 9 करोड़ 4 लाख 70 हजार तथा शहरी आबादी के 9 करोड़ 10 लाख की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इसके अनुसार देश की आबादी का 68.84 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण और 31.16 प्रतिशत हिस्सा शहरी है। सर्वाधिक 89.96 प्रतिशत ग्रामीण आबादी हिमाचल प्रदेश और सबसे ज्यादा 97.50 प्रतिशत शहरी जनसंख्या दिल्ली में है।

2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल जनसंख्या के राज्यवार वितरण को निम्न आँकड़ो से समझा जा सकता है।

2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या का राज्यवार वितरण

भारत / राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	जनसंख्या
भारत	**1,21,01,93,422**
जम्मू कश्मीर	1,25,48,926
हिमाचल प्रदेश	68,56,509
पंजाब	2,77,04,236
चंडीगढ़	10,54,686
उत्तराखण्ड	1,01,16,752
हरियाणा	2,53,53,081
दिल्ली	1,67,53,235
राजस्थान	6,86,21,012
उत्तर प्रदेश	19,95,81,477
बिहार	10,38,04,637
सिक्किम	6,07,688
अरूणाचल प्रदेश	13,82,611
नागालैन्ड	19,80,602
मणिपुर	27,21,756
मिजोरम	10,91,014
त्रिपुरा	36,71,032
मेघालय	29,64,007

भारत / राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	जनसंख्या
आसाम	3,11,69,272
पश्चिम बंगाल	9,13,47,736
झारखण्ड	3,29,66,238
उडिसा	4,19,47,358
छत्तीसगढ़	2,55,40,196
मध्य प्रदेश	7,25,97,565
गुजरात	6,03,83,628
दमन दीव	2,42,911
दादर एवं नगर हवेली	3,42,853
महाराष्ट्र	11,23,72,972
आन्ध्र प्रदेश	8,46,65,533
कर्नाटक	6,11,30,704
गोआ	14,57,723
लक्षद्वीप	64,429
केरल	3,33,87,677
तमिलनाडु	7,21,38,958
पुडुचेरी	12,44,464
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	3,79,944

इस बार के प्रारंभिक आँकड़े उम्मीद की हल्की सी किरण जगाते हैं। इस बार की जनसंख्या रिपोर्ट में महिला शिक्षा की दर बढ़ती दिख रही है और महिलाओं और पुरुषों के बीच का अंतर (स्त्री पुरुष अनुपात) पिछली जनसंख्या के मुकाबले थोड़ा बेहतर हुआ है। लेकिन बच्चों के मामले में लिंगानुपात की दर में थोड़ी कमी एक खतरनाक संकेत है, जो बालिका भ्रूण हत्या बढ़ने की ओर संकेत करता है। छः साल तक की आबादी में इस समय एक हजार लड़कों के मुकाबले सिर्फ 914 लड़कियाँ ही है।

भारत की जनगणना 2011 के औपबंधिक जनसंख्या आँकड़े

जनसंख्या	कुल	1,21,01,93,422	
	पुरुष	62,37,24,248	
	स्त्री	58,64,69174	
दशकीय जनसंख्या वृद्धि		कुल	प्रतिशत
	व्यक्ति	18,14,55,986	17.64
	पुरुष	9,15,01,158	17.19
	स्त्री	8,99,54,828	18.12
जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग किलोमीटर)		382	
लिंग अनुपात प्रति 1000 पुरुष पर महिलाओं की संख्या		940	
0-6 आयु के बच्चों की संख्या		कुल	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
	व्यक्ति	15,87,89,287	
	पुरुष	8,29,52,135	
	स्त्री	7,58,37,152	
(शिक्षित) साक्षरता		कुल	साक्षरता दर
	व्यक्ति	77,84,54,120	74.04
	पुरुष	44,42,03,762	82.14
	स्त्री	33,42,50,358	65.46

2011 की जनगणना के अनुसार
पाँच सर्वाधिक और पाँच सबसे कम जनसंख्या वाले राज्य

सर्वाधिक जनसंख्या वाले पाँच राज्य	
राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	जनसंख्या
उत्तर प्रदेश	19,95,81,477
महाराष्ट्र	11,23,82,972
बिहार	10,38,04,637
पश्चिम बंगाल	9,13,47,736
आन्ध्र प्रदेश	8,46,65,533

कम जनसंख्या वाले पाँच राज्य	
राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	जनसंख्या
लक्ष्यद्वीप	64,429
दमन एवं दिव	2,42,911
दादर एवं नगर हवेली	3,42,853
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	3,79,944
सिक्किम	6,07,688

पाँच सर्वाधिक तेज जनसंख्या वृद्धि दर और पाँच सबसे कम जनसंख्या वृद्धि दर वाले राज्य

पाँच सर्वाधिक तेज जनसंख्या वृद्धि दर वाले राज्य	
राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	वृद्धि दर
मेघालय	27.82
अरूणाचल प्रदेश	25.92
बिहार	25.07
जम्मू कश्मीर	23.71
मिजोरम	22.78

पाँच सबसे कम जनसंख्या वृद्धि वाले राज्य	
राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	वृद्धि दर
नागालैंड	-0.47
केरल	4.86
लक्षद्वीप	6.23
अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह	6.68
गोआ	8.17

भारत में साक्षरता (लैंगिक आधार पर)

भारत में लिंगवार साक्षरता दर 1981-2011

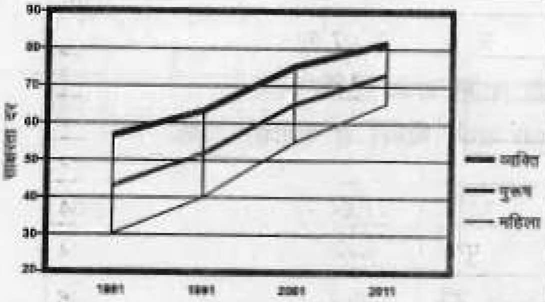

भारत में लिंगवार साक्षरता दर 2011			
वर्ष	साक्षारता दर		
	व्यक्ति	पुरुष	स्त्री
1981	43.57	56.38	29.76
1991	52.21	64.13	39.29
2001	64.83	75.26	53.67
2011	74.04	82.14	65.46

भारत में साक्षारता दर (राज्यवार)

भारत / राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	साक्षरता दर (प्रतिशत)		
	व्यक्ति	पुरुष	स्त्री
1	2	3	4
भारत	**74.04**	82.14	65.46
जम्मू कश्मीर	68.74	78.26	58.01
हिमाचल प्रदेश	83.78	90.83	76.60
पंजाब	76.68	81.48	71.34

भारत / राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	दशकीय वृद्धि दर		
	व्यक्ति	पुरुष	स्त्री
1	2	3	4
आसाम	73.18	78.81	67.27
पश्चिम बंगाल	77.08	82.67	71.16
झारखण्ड	67.63	78.45	56.21
उडिसा	73.45	82.40	64.36

चंडीगढ़	86.43	90.54	81.38	छत्तीसगढ	71.04	81.45	60.59
उत्तराखण्ड	79.63	88.33	70.70	मध्य प्रदेश	70.63	80.53	60.02
हरियाणा	76.64	85.38	66.77	गुजरात	79.31	87.23	70.73
दिल्ली	86.34	91.03	80.93	दमन दीव	87.07	91.48	79.59
राजस्थान	67.06	80.51	52.66	दादर एवं नगर हवेली	77.65	86.46	65.93
उत्तर प्रदेश	69.72	79.24	59.26	महाराष्ट्र	82.91	89.82	75.48
बिहार	63.82	73.39	53.33	आन्ध्र प्रदेश	67.66	75.56	59.74
सिक्किम	82.20	87.29	76.43	कर्नाटक	75.60	82.85	68.13
अरुणाचल प्रदेश	66.95	73.69	59.57	गोआ	87.40	92.81	81.84
नागालैन्ड	80.11	83.29	76.69	लक्षद्वीप	92.28	96.11	88.25
मणिपुर	79.85	86.49	73.17	केरल	93.91	96.02	91.98
मिजोरम	91.58	93.72	89.40	तमिलनाडु	80.33	86.81	73.86
त्रिपुरा	87.75	92.18	83.15	पुडुचेरी	86.55	82.12	81.22
मेघालय	75.48	77.17	73.78	अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	86.27	90.11	81.84

सर्वाधिक साक्षरता दर वाला राज्य केरल और सबसे कम साक्षरता दर वाला राज्य बिहार से संबंधित चार्ट

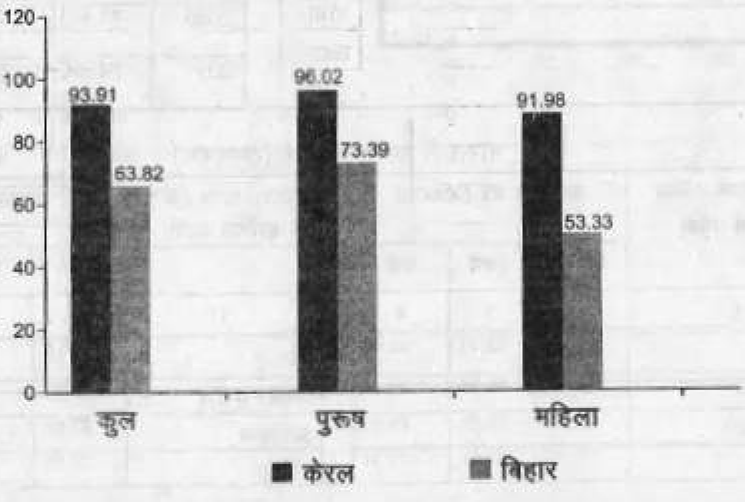

निम्न चार्ट के माध्यम से देश में लिंगानुपात की स्थिति को जाना जा सकता है।

लिंग अनुपात

भारत/राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	लिंग अनुपात (स्त्री 1000 प्रति पुरुष)	
	2001	2011
1	2	3
भारत	**933**	**940**
जम्मू कश्मीर	892	883
हिमाचल प्रदेश	968	974
पंजाब	876	893
चंडीगढ़	777	818
उत्तराखण्ड	962	963
हरियाणा	861	877
दिल्ली	821	866
राजस्थान	921	926
उत्तर प्रदेश	898	908
बिहार	919	916
सिक्किम	875	889
अरुणाचल प्रदेश	893	920
नागालैन्ड	900	931
मणिपुर	974	987
मिजोरम	935	975
त्रिपुरा	948	961
मेघालय	972	986

भारत/राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	लिंग अनुपात (स्त्री 1000 प्रति पुरुष)	
	2001	2011
1	2	3
आसाम	935	954
पश्चिम बंगाल	934	947
झारखण्ड	941	947
उड़िसा	972	978
छत्तीसगढ़	989	991
मध्य प्रदेश	919	930
गुजरात	920	918
दमन दीव	710	618
दादर एवं नगर हवेली	812	775
महाराष्ट्र	822	925
आन्ध्र प्रदेश	978	992
कर्नाटक	965	968
गोआ	961	968
लक्षद्वीप	948	946
केरल	1058	1084
तमिलनाडु	987	995
पुदुचेरी	1001	1038
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	846	878

भारत, विश्व व अन्य देशों में लिंगानुपात की स्थिति

भारत एवं अन्य देश	
देश	लिंगानुपात
विश्व	984
रशियन फेडरेशन	1165
जापान	1054
युनाइटेड किंगडम	1037
ब्राजील	1031
दक्षिण अफ्रिका	1028
संयुक्त राज्य अमेरिका	1026
रिपब्लिक ऑफ कोरिया	1020
ऑस्ट्रेलिया	1011
ईरान	968
भारत	940
चीन	927
म्यनमार	1048
श्रीलंका	1032
नेपाल	1014
बांग्लादेश	978

- भारत में लिंगानुपात चीन जो सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश है से थोड़ा अच्छा है।
- जबकि यूरोपियन, अफ्रिका एवं अमेरिकी देशों में लिंगानुपात भारत की तुलना में अच्छा है।
- श्रीलंका, नेपाल एवं म्यनमार का लिंगानुपात भारत से अच्छा है।

भारत में शिशु लिंग अनुपात

भारत/राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	लिंग अनुपात (0-6 वर्ष वाले बच्चों की जनसंख्या)	
	2001	2011
1	2	3
भारत	**927**	**914**
जम्मू कश्मीर	941	859
हिमाचल प्रदेश	896	906
पंजाब	798	846
चंडीगढ़	845	867
उत्तराखण्ड	908	886
हरियाणा	819	830
दिल्ली	868	866
राजस्थान	909	883
उत्तर प्रदेश	916	899
बिहार	942	933
सिक्किम	963	944
अरूणाचल प्रदेश	964	960
नागालैन्ड	964	944
मणिपुर	957	934
मिजोरम	964	971
त्रिपुरा	966	953
मेघालय	973	970

भारत/राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	लिंग अनुपात (स्त्री 1000 प्रति पुरुष)	
	2001	2011
1	2	3
आसाम	965	957
पश्चिम बंगाल	960	950
झारखण्ड	965	943
उडिसा	953	934
छतीसगढ़	975	964
मध्य प्रदेश	932	912
गुजरात	883	886
दमन दीव	926	909
दादर एवं नगर हवेली	979	924
महाराष्ट्र	913	883
आन्ध्र प्रदेश	961	943
कर्नाटक	946	943
गोआ	938	920
लक्ष्यद्वीप	959	908
केरल	960	959
तमिलनाडु	942	946
पुडुचेरी	967	965
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	957	966

भारत में शिशु लिंगानुपात को दर्शाता आरेख

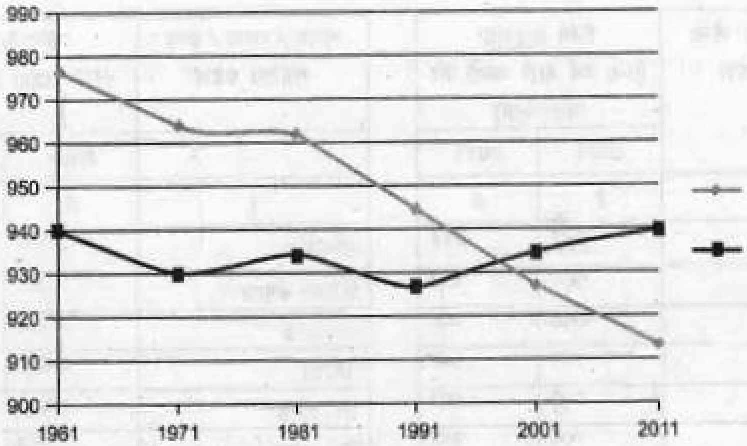

पाँच सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाले राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश तथा पाँच सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाले राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश

पाँच सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाले	
राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	घनत्व
दिल्ली	11,297
चण्डीगढ़	9,252
पुडुचेरी	2,598
बिहार	1,102
पश्चिम बंगाल	1,029

पाँच सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाले	
राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	घनत्व
अरुणाचल प्रदेश	17
अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह	46
मिजोरम	52
सिक्किम	86
नागालैण्ड	119

जनगणना 2011 के अनुसार बिहार

जनगणना 2011 के अनुसार बिहार की कुल जनसंख्या 1,03,804,637 है जिसमें महिलाओं की संख्या 39,754,714 तथा पुरुषों की संख्या 43,243,795 है। कुल आबादी की 11.30 प्रतिशत आबादी शहरों में रहती है। बिहार की जनसंख्या में पिछली जनगणना के बाद से 8.30 करोड़ की वृद्धि हुई है। बिहार की जनसंख्या में 1991 से 2001 के बीच दशकीय वृद्धि जहाँ 28.43 प्रतिशत था वही 2001-11 के बीच 25.07 प्रतिशत रहा है।

लिंगानुपात की स्थिति 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति 1000 पुरुष संख्या के अनुपात में महिलाओं की संख्या 916 है जो कि राष्ट्रीय औसत 940 से काफी कम है। 2001 की जनगणना के अनुसार बिहार के प्रति 1000 में स्त्रियों की संख्या 921 थी।

जनगणना 2011 के अनुसार बिहार की जनसंख्या के आँकड

शहरी जनसंख्या का प्रतिशत			2001	2011			
			10.46	10.30			
		कुल	ग्रामीण	शहरी			
जनसंख्या	व्यक्ति	103,804,637	92,075,028	11,729,609			
	पुरुष	54,185,347	47,983,851	6,201,496			
	स्त्री	49,619,290	44,091,177	5,528,113			
दशकीय जनसंख्या वृद्धि 2001-2011		कुल			प्रतिशत		
		कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी
	व्यक्ति	20,806,128	11,758,319	3,047,809	25.07	23.90	35.11
	पुरुष	10,941,552	9,388,855	1,552,697	25.30	24.33	33.40
	स्त्री	9,864,576	8,369,464	1,495,112	24.81	23.43	37.07
लिंग अनुपाती (प्रति 1000 पुरुष पर महिला)		916	919	891			
0-6 आयु वर्ग वाले की जनसंख्या		कुल			कुल का प्रतिशत		
		कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी
	व्यक्ति	18,582,229	16,899,426	1,682,803	17.90	18.35	14.35
	पुरुष	9,615,280	8,732,235	883,045	17.75	18.20	14.24
	स्त्री	8,966,949	8,167,191	799,758	18.07	18.52	14.47
शिशु लिंग अनुपाती (0-6 आयु वर्ग) (प्रति 1000 पुरुष पर महिला)		933	935	906			
		कुल			साक्षरता दर		
		कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी
	व्यक्ति	54,390,254	46,478,818	7,911,436	63.82	61.83	78.75
	पुरुष	32,711,975	28,221,885	4,490,090	73.39	71.90	84.42
	स्त्री	21,678,279	18,256,933	3,421,346	53.33	50.82	72.36

बिहार की जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या का 8.58 प्रतिशत है जबकि 2001 की जनगणना के अनुसार 8.07 प्रतिशत थी।

इसे नीचे दिए गए वृत चित्र में देखा जा सकता है।

देश की कुल जनसंख्या में बिहार का प्रतिशत हिस्सा

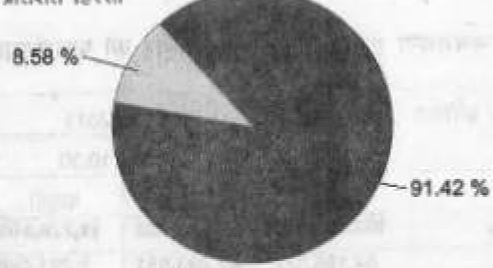

बिहार की जिलावार जनसंख्या

	Population	Male	Female
पटना	5,772,804	3,051,117	2,721,687
पूर्वी चम्पारण	5,082,868	2,674,037	2,408,831
मुजफ्फरपुर	4,778,610	2,517,500	2,261,110
गया	4,379,383	2,266,865	2,112.518
समस्तीपुर	4,254,782	2,228,432	2,026,350
सारण	3,943,098	2,023,476	1,919,622
पश्चिम चम्पारण	3,922,780	2,057,669	1,865,111
दरभंगा	3,921,971	2,053,043	1,868,928
वैशाली	3,495,249	1847058	1648191
सीतामढ़ी	3,419,622	1800441	1619181
सीवान	3,318,176	1672121	1646055
पूर्णिया	3,273,127	1695829	1577298
कटिहार	3,068,149	1601158	1466991
भागलपुर	3,032,226	1614014	1418221
रोहतास	2962593	1547856	1414737
बेगुसराय	2954367	1560203	1394164
नालन्दा	2872523	1495577	1376946
अररिया	2806200	1460878	1345322
भोजपुर	2720155	1431722	1288433
गोपालगंज	2558037	1269677	1288360
औरंगाबाद	2511243	1310867	1200376
सुपौल	2228397	1157815	1070582
नवादा	2216653	1145123	1071530

बांका	2029339	1064307	965032
मधेपुरा	1994618	1042373	952245
सहरसा	1897102	995502	901600
जमुई	1756078	914368	841710
बक्सर	1707643	888356	819287
किशनगंज	1690948	868845	822103
खगरिया	1657599	880065	777534
कैमूर	1626900	847784	779116
मुंगेर	1359054	723280	635774
जहानाबाद	1124176	586202	537974
लखीसराय	1000717	526651	474066

बिहार की जनसंख्या घनत्व

बिहार का कुल क्षेत्रफल 94.163 वर्ग किलोमीटर है। जनगणना 2011 के अनुसार बिहार में प्रति वर्ग किलोमीटर में 1102 व्यक्ति रहते हैं जो कि राष्ट्रीय जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से काफी अधिक है। 2001 की जनगणना के अनुसार बिहार जनसंख्या घनत्व 881 प्रति वर्ग किलोमीटर था जबकि राष्ट्रीय जनसंख्या घनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था।

जनसंख्या वृद्धि के कारण

जैसा कि हमने पाठ के शुरुआत में जनसंख्या विस्फोट के अध्ययन के क्रम में जाना कि जनांकिकी परिवर्तन सिद्धांत के दूसरी अवस्था में जब मृत्यु दर नीचे आने लगती है लेकिन जन्म दर ऊँची बनी रहती है तो जनसंख्या में वृद्धि होती है। मृत्यु दर की अपेक्षा जन्म दर जितनी अधिक होगी जनसंख्या उतनी ही तेजी से बढ़ती है। इसके अतिरिक्त किसी स्थान विशेष की जनसंख्या की वृद्धि का एक और कारण हो सकता है प्रव्रजन **(Migration)**। इसके बड़ी संख्या में लोग किसी विशेष स्थान पर आकर बस जाते हैं। हमारे देश में शहरों की आबादी बढ़ने का एक प्रमुख कारण प्रव्रजन है, जहाँ गाँवों से बड़ी संख्या में लोग रोजगार या बेहतर जीवन की तलाश में शहरों में आकर बस जाते हैं। हाल के वर्षों में बांग्लादेश से बड़ी संख्या में वहाँ के नागरिक अवैध रूप से भारत आकर बस गए जिससे सीमावर्ती राज्यों में जनसंख्या बढ़ी है। लेकिन देश में जनसंख्या वृद्धि के मुख्यतः दो ही कारण है; मृत्यु दर में अत्यधिक कमी तथा जन्म दर का ऊँचा रहना।

जनसंख्या वृद्धि के कारणों को समझने के लिए हमें मृत्यु दर में गिरावट और ऊँची जन्म दर के कारणों को जानना होगा।

मृत्यु दर में गिरावट के कारण

1. अकालों में कमी

आजादी के पूर्व देश को बार-बार अकाल का सामना करना पड़ता था जिससे बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु होती थी। स्वतंत्रता के बाद स्थिति में काफी सुधार हुआ। अकाल तथा उसके प्रभाव को रोकने के लिए कई उपाय किए गए। बाढ़ या सूखा के कारण वाली क्षति की स्थिति में राहत कार्य अब जितनी तेजी से होती है उससे अब ज्यादा लोगों की जाने नहीं जाती है। यदि किसी स्थान पर अकाल की स्थिति आती है तो सरकार अपने खाद्यान्न भंडार का प्रयोग कर या दूसरे जगहों से अनाज लाकर लोगों को

उपलब्ध कराती है। सरकार इसके अलावे भी लोगों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए कई प्रकार से प्रयास करती रहती है। सरकार के इन प्रयासों से मृत्यु दर में कमी हुई है।

2. महामारियों पर नियंत्रण

आजादी से पहले हमारे देश में हैजा, प्लेग और चेचक का प्रकोप अक्सर होता रहता था। इन महामारियों से भी काफी बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु होती थी। ये बीमारियाँ संक्रामक होती थी और किसी गाँव में इसके फैलने से उस गाँव के अधिकांश लोगों की मौत हो जाती थी। समय के साथ-साथ इन महामारियों पर नियंत्रण होता गया जिससे मृत्यु दर में कमी हुई।

3. जीवन की औसत आयु में निरंतर सुधार

भारत में लोगों के जीवन की औसत आयु पहले काफी कम थी। 1971 की जनगणना के अनुसार जीवन की औसत आयु सिर्फ 46 वर्ष थी जो 2001 ई. में बढ़कर लगभग 65 वर्ष हो गयी। इसका अर्थ है कि अब लोग अधिक उम्र तक जीवित रहते हैं। इसका मुख्य कारण स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रसार/उपलब्धता तथा जीवन स्तर में सुधार है।

जन्म दर ऊँची होने के कारण

1. कृषि की व्यापकता एवं निर्भरता

भारत का मुख्य व्यवसाय कृषि है। आजादी के 66 वर्षों के बाद भी भारत की आबादी का 2/3 हिस्सा कृषि कार्यों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लगा है। खेती कार्यों में लगे हुए लोग अपने आवश्यकतानुसार बच्चों का भी सहयोग लेते हैं। छोटी आयु में ही वे पशुओं को चराने, खेतों की रखवाली करने, निराई-कटाई करने आदि में पिता का हाथ बटाते लगते हैं। इसलिए किसान अधिक सन्तान को बुरा नहीं समझते। भारत में जहाँ खेती के तकनीक पिछड़े हैं और जहाँ कृषि कार्य में जुताई और फसलों की कटाई, निराई आदि के लिए ज्यादा श्रम की आवश्यकता होती है वहाँ बाल श्रम की उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता।

2. शहरीकरण का नीचा स्तर

पश्चिमी देशों की तुलना में भारत में शहरों की संख्या और उनमें रहने वाली जनसंख्या का अनुपात बहुत कम है। भारत में करीब 27 प्रतिशत ही शहरी जनसंख्या है, जहाँ इंग्लैंड में 92 प्रतिशत और जर्मनी में 86 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में निवास करता है। शहरों में आवास की समस्या, बच्चों का महंगा लालन-पालन, संयुक्त परिवार का टूटना, साक्षरता दर में वृद्धि आदि वे सारे कारण है जिनमें जन्म दर में कमी होती है। विद्वानों का विचार है कि भारत में जैसे-जैसे औद्योगीकरण बढ़ेगा शहरीकरण का विस्तार होगा साथ ही जन्म दर में कमी होगी।

3. गरीबी की व्यापकता

गरीबी तथा उससे संबंधित अनेक कारणों के फलस्वरूप अर्द्धविकसित देशों में जन्म-दर बहुत अधिक होती है। उत्पादकता में वृद्धि, आर्थिक संगठन में सुधार, लोगों के स्वास्थ्य को प्रोत्साहन और औद्योगीकरण की दिशा में प्रगति चाहे जितनी क्यों न हो, जनसाधारण का जीवन-स्तर एक संतोषजनक स्तर पर तब तक न पहुँचेगा जब तक कि जनसंख्या का आकार आर्थिक संसाधनों के साथ ठीक ढंग से सामंजित **(Adjusted)** नहीं होता।

महमूद ममदानी ने लिखा है, "लोग इसलिए गरीब नहीं है कि उनके परिवार बड़े हैं। इसके विपरीत, उनके परिवार इसलिए बड़े होते हैं, क्योंकि वे गरीब है।"

विश्व बैंक के प्रकाशन वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट 1984 के अनुसार भी - "गरीब माता-पिताओं के लिए बच्चों की परवरिश की लागत नीची होने के ठोस कारण है। बच्चों से आर्थिक लाभ ज्यादा है, और इसलिए ज्यादा बच्चे होना आर्थिक दृष्टि से विवेकपूर्ण है।"

अन्य कारण

1. विवाह के समय कम उम्र होना
2. धार्मिक और सामाजिक अन्धविश्वास
3. संयुक्त परिवार प्रथा
4. शिक्षा का अभाव
5. संतति निरोधक उपायो का सीमित प्रयोग

जनसंख्या नीति (Population Policy)

भारत के लिए अनुकूलतम जनसंख्या क्या है, यह तो निश्चित रूप से बता सकना कठिन है, लेकिन इसमें सन्देह नहीं है कि देश में जनसंख्या का जो भी आकार है और जिस क्रम से जनसंख्या बढ़ रही है यह आर्थिक विकास में निश्चय ही बाधक है। भारत में इस समय 'जनसंख्या विस्फोट' की स्थिति है। जनसंख्या नीति का अभिप्राय उस सरकारी मान्यता से है जिसके अनुसार देश की जनसंख्या को नियंत्रित करने का प्रयास किया जा सके। परन्तु भारत में जनसंख्या विस्फोट को रोकने के लिए कोई आर्थिक व सामाजिक उपाय नहीं किए गए हैं। सरकार का पूरा जोर परिवार नियोजन कार्यक्रम पर रहा है। भारत सरकार आरंभ से ही परिवार-नियोजन के लिए प्रयत्नशील है। सरकारी कार्यक्रम के रूप में परिवार-नियोजन को सर्वप्रथम सन् 1952 ई0 में अपनाया गया। परिवार-नियोजन की सफलता के लिए लोगों में चेतना की आवश्यकता है। धर्म के आधार पर भारत में परिवार नियोजन का विरोध नहीं है। इसलिए शिक्षा के प्रसार और अनुकूल आर्थिक दशाओं को उत्पन्न कर परिवार नियोजन के लिए अनुकूल वातावरण को तैयार किया जा सकता है। पहली दो पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में सरकार द्वारा परिवार नियोजन के प्रति जनसाधारण की प्रतिक्रिया जानने के लिए कुछ अध्ययन किए गए थे, जिनसे मालूम हुआ कि भारत में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में यद्यपि इसका व्यापक स्तर पर विरोध नहीं है फिर भी आम लोग परिवार को सीमित करने के लिए अधिक प्रेरित नहीं है। शहरों में अब भी सामन्यतः तीन बच्चों का होना और ग्रामीण क्षेत्रों में चार बच्चों का होना ठीक समझा जाता है।

गाँवो में यद्यपि परिवार के वृद्ध सदस्य परिवार नियोजन का विरोध नहीं करते, लेकिन संकोच के कारण युवा दम्पति खुलकर रुचि नहीं दिखाते। परिवार नियोजन को सबसे अधिक सफलता शिक्षित और सम्पन्न वर्गों में मिली है। मजदूर तथा किसान वर्ग के लोग कृत्रिम निरोधों को मुफ्त प्राप्त करना चाहते हैं।

16 अप्रैल 1976 को भारत सरकार ने जनसंख्या संबंधी अपनी नीति की घोषणा की। इसमें जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि को रोकना आर्थिक एवं मानवीय दोनों ही दृष्टियों से आवश्यक माना गया। 1976 के जनसंख्या नीति के अंतर्गत परिवार कल्याण कार्यक्रमों को विशेष महत्व दिया गया था। इस नीति में लड़कियों की शादी की उम्र 15 वर्ष से बढ़ाकर 18 वर्ष तथा लड़कों की शादी की उम्र 18 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष कर देने का सुझाव दिया गया था, जिसे 1 अक्टूबर 1978 से वैधानिक रूप दे दिया गया है।

इन कार्यक्रमों के बाद भी परिवार नियोजन एवं इससे संबंधित कार्यक्रमों को विशेष सफलता नहीं मिली है। अतएव, जनसंख्या नियंत्रण के उपायों को प्राथमिकता प्रदान करने में लिए भारत सरकार ने 15 फरवरी 2000 को अपनी राष्ट्रीय जनसंख्या-नीति की घोषणा की। यह भारत की दूसरी जनसंख्या-नीति है। इस नीति में अंतर्गत छोटे परिवार में सिद्धान्तों का पालन करने वालों के

लिए 16 प्रोत्साहक एवं प्रेरक उपायों पर बल दिया गया है। वर्तमान जनसंख्या-नीति का एक महत्वपूर्ण कदम 1971 की जनगणना के आधार पर लोकसभा एवं विधानसभा के सीटों की संख्या 2026 तक यथावत रखने का निर्णय है।

सरकार की वर्तमान जनसंख्या-नीति को तीन भागों में बाँटा गया है - तात्कालिक, मध्यावधि एवं दीर्घावधि। इस तीन सूत्री नीति में 2045 तक भारत की जनसंख्या को स्थिर रखने का लक्ष्य रखा गया है। इस नीति में तात्कालिक उद्देश्यों में गर्भनिरोध की जरूरतों को पूरा करना, स्वास्थ्य सम्बन्धी आधारित ढाँचा और स्वास्थ्य कर्मचारियों को व्यवस्था करना तथा पुनरूत्पादनीय एवं शिशु स्वास्थ्य की देखभाल के लिए एकीकृत सेवा प्रदान करना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का मध्यावधि उद्देश्य है 2010 तक जनन क्षमता दर **(Fertility rate)**को प्रतिस्थापन स्तर तक लाना। दीर्घकालिक उद्देश्य है 2045 तक स्थिर जनसंख्या की स्थिति को प्राप्त करना। साथ ही उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश सहित भारत की लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या वाले 12 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में जनसंख्या नियंत्रण के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए कार्य योजना की घोषणा की गई है।

भारत सरकार की जनसंख्या नीति

- भारत में जनसंख्या पर नियंत्रण लगाने के लिए आर्थिक व सामाजिक कदमों का सहारा न लेकर सरकार ने परिवार नियोजन कार्यक्रम का सहारा लिया है।
- प्रवीण विसारिया के अनुसार, यदि परिवार नियोजन पर जोर न दिया गया होता तो भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर भी उतनी ही तेजी से बढ़ती जितनी अफ्रीका के कई देशों में बढ़ी है।
- आर्थिक आयोजन के आरंभिक काल में भारत सरकार को परिवार नियोजन कार्यक्रम की आवश्यकता केवल 1961 की जनगणना के परिणामों के प्रकाशन के बाद महसूस हुई जब यह पता लगा कि जनसंख्या वृद्धि की दर, अनुमानित दर से काफी अधिक है।
- सरकार ने परिवार नियोजन के अंतर्गत पहले 'क्लीनिक दृष्टिकोण' को अपनाया और फिर 'प्रसार दृष्टिकोण' को।
- जब इस नीति से वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हुए तो सरकार ने 1976 में एक दृढ़ व सुस्पष्ट जनसंख्या नीति अपनाने का संकल्प लिया।
- इस 'दृढ़ नीति' के अंतर्गत 'कैम्प दृष्टिकोण' अपनाया गया जिसके अन्तर्गत लोगों को तरह-तरह से प्रलोभन देकर कैम्पों में बंध्याकरण के लिए लाया जाता था।
- 1976 मे आपातकाल के दौरान बंध्याकरण के इस कार्यक्रम में भ्रष्ट प्रशासन ने अपनी शक्तियों का भरपूर दुरुपयोग किया।
- बाध्यकर **(coercive)** उपायों की वजह से यह कार्यक्रम बहुत बदनाम हुआ और लोगों ने इसका भारी विरोध किया। अत: थोड़े समय में जन्म दर नीची करने के सरकारी प्रयोग का अन्त घोर विफलता के रूप में हुआ।
- आठवीं पंचवर्षीय योजना में जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना एक मुख्य उद्देश्य था।
- आठवीं योजना में जनसंख्या नीति में विकेन्द्रित आयोजन तथा कार्यान्वन पर विशेष जोर दिया गया।
- राष्ट्रीय रोजगार नीति 2000 में तात्कालिक, मध्यकालिक तथा दीर्घकालिक उद्देश्यों की चर्चा की गई है।
- तात्कालिक उद्देश्य है स्वास्थ्य आधारिक संरचना तथा स्वास्थ्य कर्मचारियों की जरूरतों को पूरा करना।
- मध्यावधि उद्देश्य है जनन क्षमता दर को कम करना तथा 2010 तक प्रतिस्थापन दर तक लाना।
- दीर्घकालिक उद्देश्य है 2045 तक स्थिर जनसंख्या की स्थिति प्राप्त करना।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:-

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग या घ) लिखें।

1. दुनिया का दूसरी सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है -
   (क) चीन (ख) भारत (ग) सं. रा. अमेरिका (घ) इनमें से कोई नहीं
2. भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है -
   (क) बिहार (ख) महाराष्ट्र (ग) पश्चिम बंगाल (घ) उत्तर प्रदेश
3. भारत का सर्वाधिक तेज जनसंख्या वृद्धि दर वाला राज्य है -
   (क) मेघालय (ख) बिहार (ग) उत्तर प्रदेश (घ) जम्मू एवं कश्मीर
4. बिहार में साक्षरता दर है -
   (क) 63.82 प्रतिशत (ख) 73.39 प्रतिशत (ग) 53.33 प्रतिशत (घ) इनमें से कोई नहीं
5. बिहार में प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या है -
   (क) 940 (ख) 916 (ग) 1084 (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : 1. ख, 2. घ, 3. क, 4. क, 5. ख

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

1. जनगणना 2011 के अनुसार बिहार में प्रति एक वर्ग किलोमीटर में .... व्यक्ति रहते हैं।
2. भारत का सर्वाधिक साक्षरता वाला राज्य .... है।
3. भारत में जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख कारण मृत्युदर में .... है।
4. भारत में प्रति 1000 पुरुष पर स्त्रियों की संख्या .... है।
5. 2011 के जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या .... है।

उत्तर : 1. 1102, 2. केरल, 3. कमी, 4. 940, 5. 1,21,01,93,422

लघु उत्तरीय

1. जनसंख्या घनत्व से आप क्या समझते हैं ?
2. लिंगानुपात से आप क्या समझते हैं ?
3. 2011 के जनगणना के अनुसार बिहार की साक्षरता दर, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात का वर्णन करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या विस्फोट से आप क्या समझते हैं ? व्याख्या करें।
2. 2011 के जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या का संक्षेप में विवेचना करें।
3. भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारणों की व्याख्या करें।
4. भारत की जनसंख्या नीति का संक्षेप में वर्णन करें।

*****